IJAER/ Jan-Feb 2023/Volume-12/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

जन शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द की अवधारणा

मंजू वर्मा
शोधार्थी ग्लोकल विश्वविद्यालय सहारनपुर
उत्तर प्रदेश

डॉ. वी. के. शर्मा
प्रोफेसर शिक्षा संकाय ग्लोकल विश्वविद्यालय सहारनपुर
उत्तर प्रदेश

सार

स्वामी विवेकानन्द को दुनिया भारत के देशभक्त संत, एक समाज सुधारक, एक धार्मिक नेता, एक दार्शनिक और एक शिक्षाविद् के रूप में जानती थी। इसलिए एक शिक्षाविद् विवेकानन्द ने भारतीयों की स्थिति को देखने के बाद शिक्षा के बारे में अपना विचार विकसित किया। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में, यह उनके प्रत्यक्ष ज्ञान और लोगों के प्रति गहरी सहानुभूति पर आधारित है। शिक्षा के बारे में उनके उपदेश से एक महत्वपूर्ण विचार यह निकलता है कि वह जनता को शिक्षित करना और बढ़ाना चाहते थे, क्योंकि उनका मानना था कि देश की प्रगति पूरी तरह से होगी। जनता के हाथों पर निर्भर करता है। इसलिए जनता के बीच शिक्षा बहुत जरूरी है, क्योंकि स्वामी विवेकानन्द लोगों को 'अपने पैरों पर खड़ा' देखना चाहते थे, जिसे आधुनिक भाषा में भागीदारी कहा जाता है। इसलिए विवेकानन्द ने वास्तव में जनता के बीच शिक्षा के प्रसार को बहुत महत्व दिया, जिससे उन्हें सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन में सक्रिय भूमिका निभाने का समान अवसर मिलेगा।

मुख्य शब्दः *सामूहिक शिक्षा, मनुष्य निर्माण की शिक्षा, स्व–शिक्षा*

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानन्द का जीवन दर्शन

उनके जीवन–दर्शन का मूल तत्व संघर्ष द्वारा निर्भय बनना और सद्भावना के साथ मानव जाति की सेवा करना है। उसे ऐसा व्यक्ति बनाना है जो शत्रुओं से न डरे, हर कठिनाई का बिना किसी दमन के दृढ़तापूर्वक और आत्मविश्वास से मुकाबला करे। पश्चिम के आदर्शवादी दर्शन और प्राचीन हिंदू धर्म के रचनात्मक दर्शन को शामिल करके, उन्होंने जीवन जीने की हिंदू पद्धति को प्रतिभा और महत्व दिया। एक समय था जब समाज अपनी दृष्टि में लगभग स्थिर था। बच्चे अपने माता–पिता के व्यवसाय का पालन करते थे और अपने ज्ञान और कौशल को अपने बच्चों को हस्तांतरित करते थे। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सभ्यता में बहुत कम परिवर्तन होता था और साम्राज्य बिना किसी प्रभाव के विकसित, विकसित और क्षय होते थे। जीवन जीने के तरीकों और जनता के दृष्टिकोण के बावजूद, चीजों की स्थिति में सुधार के लिए कुछ भी नहीं किया गया। उस समय स्वामी विवेकानन्द को दुनिया भारत के देशभक्त संत, एक समाज सुधारक, एक धार्मिक नेता, एक दार्शनिक और एक शिक्षाविद् के रूप में जानती थी। इसलिए एक शिक्षाविद् विवेकानन्द ने भारतीयों की स्थिति को देखकर शिक्षा के बारे में अपना विचार विकसित किया। शहरी और ग्रामीण दोनों

क्षेत्रों में, यह उनके प्रत्यक्ष ज्ञान और लोगों के प्रति गहरी सहानुभूति पर आधारित है। शिक्षा के बारे में उनके उपदेश से एक महत्वपूर्ण विचार यह निकलता है कि वह जनता को शिक्षित करना और बढ़ाना चाहते थे, क्योंकि उनका मानना था कि प्रगति देश पूरी तरह से जनता के हाथों पर निर्भर करता है। इसलिए जनता के बीच शिक्षा बहुत जरूरी है, क्योंकि स्वामी विवेकानन्द लोगों को 'अपने पैरों पर खड़ा' देखना चाहते थे, जिसे आधुनिक भाषा में भागीदारी कहा जाता है। विवेकानन्द ने कहा था – दुनिया की सारी दौलत एक छोटे से भारतीय गाँव की मदद नहीं कर सकती, अगर लोगों को खुद की मदद करना नहीं सिखाया जाए। हमारा काम मुख्य रूप से शैक्षिक, नैतिक और बौद्धिक दोनों होना चाहिए। इसलिए जनता के बीच शिक्षा फैलाने में विवेकानन्द को वास्तव में बहुत महत्व दिया जाता है। ताकि उन्हें सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन में सक्रिय भूमिका निभाने का समान अवसर मिल सके।

जन शिक्षा की अवधारणाः

यह वे लोग हैं – पुरुष, महिलाएं और बच्चे जो दुनिया के श्रमिक, किसान, छात्र और श्रमिक वर्ग हैं। द्रव्यमान की परिभाषा के संबंध में स्वामी विवेकानन्द के अनुसार यह राय है। उपरोक्त समूहों का संयोजन जनसंख्या है प्रत्येक देश के और वे प्रत्येक राष्ट्र की रीढ़ हैं, और एक राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए, सबसे पहले हमें राष्ट्र को शिक्षित करना होगा। एक राष्ट्र उसी अनुपात में उन्नत होता है, जिस अनुपात में शिक्षा और बुद्धिमत्ता जनता के बीच फैलती है।

भारत की बर्बादी का मुख्य कारण मुट्ठी भर लोगों द्वारा घमंड और शाही सत्ता के बल पर देश की संपूर्ण शिक्षा और बुद्धि पर एकाधिकार हो जाना है। अगर हमें अपने राष्ट्र को और अधिक उन्नत बनाना है और उच्चतम स्तर पर पहुंचना है तो हमें इसे उसी तरह से करेंगे जैसे कि जनता के बीच शिक्षा का प्रसार करना। वह शिक्षा जो आम जनता को जीवन के लिए तैयार करने में मदद नहीं करती, जो चरित्र की ताकत, परोपकार की भावना (सभी मानव जाति के लिए प्यार) और शेर का साहस नहीं लाती – क्या वह इस नाम के लायक है? – वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा होने में सक्षम बनाती है। उपरोक्त पंक्तियाँ स्वामी विवेकानन्द द्वारा कही गई थीं जो शिक्षा को मानव जीवन का एक हिस्सा मानते थे।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा कोई ज्ञान की जानकारी नहीं है जो शक्ति द्वारा बच्चे के मस्तिष्क में स्थापित कर दी जाये। उनके अपने शब्दों में – ''शिक्षा मनुष्य में पहले से ही पहुँच चुकी पूर्णता की अभिव्यक्ति है।'' उन्होंने दर्शाया कि पुस्तकालय दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पवित्र लोग हो सकते हैं और संदर्भ पुस्तकें द्रष्टा और ऋषि बनने की दिशा में आगे बढ़ी हैं। उन्होंने आगे कहा कि शिक्षा बड़ी मात्रा में जानकारी प्राप्त करने की नहीं है; यह हमारे मस्तिष्क का अपाच्य पदार्थ होगा। सर्वोत्तम गुणवत्ता वाली शिक्षा में जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण, चरित्र निर्माण और विचारों का अवशोषण होना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को अस्तित्व के संघर्ष के लिए तैयार करे। शिक्षा मनुष्य को समाज सेवा के लिए तैयार करती है, उसके चरित्र का निर्माण करती है और अंततः उसे एक शेर की आत्मा और शक्ति से भर देती है। क्योंकि डिग्री प्राप्त करना कोई शिक्षा नहीं है, सर्वोत्तम संभव

शिक्षा को चरित्र, मानसिक शक्तियों, बुद्धि और विकास के आधार पर देखा जाना चाहिए। स्वामीजी ने इस बात पर जोर दिया है कि जो भी जानकारी हमें सांसारिक या आध्यात्मिक से मिलती है वह मानव व्यक्तित्व में स्थापित होती है। वह अंधकार और अज्ञान की चादर से ढका हुआ था। शिक्षा अंधकार और अज्ञान से मुक्ति पाने का एक साधन है, शिक्षा प्राप्त करने के बाद विद्या निखर कर सामने आएगी। सीखना और पढ़ाना प्रतिबंधित प्रक्रिया है। शिक्षक केवल छात्र को दिशा, सलाह, संकेत और सहायता देता है। स्वयं सीखना और स्वयं जानकारी प्राप्त करना ही वास्तविक शिक्षा है। शिक्षक केवल छात्रों को जानकारी के छिपे हुए भाग्य की खोज करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करता है जो उसके अंदर निष्क्रिय है। उन्होंने किताबी शिक्षा और रटंत स्मृति शिक्षा की निंदा और खंडन किया।

शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द के विचार

शिक्षा पर विवेकानन्द का दृष्टिकोण शारीरिक शिक्षा, नैतिक और धार्मिक शिक्षा, शिक्षा के माध्यम, महिला शिक्षा और समाज के कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा से संबंधित है। शिक्षा का माध्यमः गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर की तरह, विवेकानन्द ने भी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा पर जोर दिया। मातृभाषा के अलावा एक सामान्य भाषा होनी चाहिए जो राष्ट्र को एकजुट रखने के लिए महत्वपूर्ण है। विवेकानन्द ने संस्कृत के महत्व को महत्व देते हुए कहा कि यह सभी भारतीय भाषाओं का स्रोत है और सभी विरासत में मिले ज्ञान का भंडार है; इस ज्ञान के अभाव में भारतीय संस्कृति को समझना कठिन होगा। यह प्राचीन विरासत के भंडार जैसा दिखता है, हमारे समाज के निर्माण के लिए यह महत्वपूर्ण है कि लोगों को मातृभाषा के ज्ञान के अलावा इस भाषा को भी जानना चाहिए।

मनुष्य निर्माण शिक्षाः

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन प्राचीन भारतीय आदर्शों और आधुनिक पश्चिमी मान्यताओं के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संश्लेषण है। उन्होंने न केवल बच्चों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक और व्यावसायिक विकास की चिंता की, बल्कि उन्होंने महिला शिक्षा और जनता की शिक्षा का भी समर्थन किया। स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन की मूल विशेषताएँ आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और व्यावहारिकता हैं। प्रकृतिवादी दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करते हुए उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि वास्तविक शिक्षा प्रकृति और प्राकृतिक प्रवृत्तियों के माध्यम से ही संभव है।

आदर्शवादी दृष्टिकोण के रूप में, वह मांग करते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य युवाओं को नैतिक और आध्यात्मिक गुणों से युक्त बनाना है। व्यवहारवादियों के अनुसार, उन्होंने भौतिक सफलता हासिल करने के लिए नवाचार, व्यापार, उद्योग और विज्ञान की पश्चिमी शिक्षा पर अविश्वसनीय जोर दिया। स्वामी विवेकानन्द आदर्श हृदय। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने आध्यात्मिक विकास, उसके बाद भौतिक समृद्धि, उसके बाद जीवन की भलाई और उसके बाद जनता की भोजन और कपड़े की समस्याओं को हल करने पर जोर दिया।

स्वशिक्षाः

स्वशिक्षा स्वयं की जानकारी है। अर्थात् हमारे जीवन के संघर्ष में हमारा स्वयं ही सर्वोत्तम मार्गदर्शक है। इस घटना में कि हम एक उदाहरण लेते हैं, बचपन की अवस्था, चरित्र विकास के दौरान बच्चे को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा या गलतियाँ करनी पड़ेंगी। बच्चा अपनी गलतियों से बहुत कुछ सीखेगा। गलतियाँ हमारे चरित्र के विकास में प्रवेश का पत्थर हैं। इस विकास के लिए साहस और दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता होगी। दृढ़ इच्छाशक्ति महान चरित्र का परिचायक है, इच्छाशक्ति ही मनुष्य को महान बनाती है।

नैतिक और धार्मिक शिक्षाः

विवेकानन्द ने कहा, "धर्म शिक्षा का सबसे गहरा केंद्र है। मेरा अभिप्राय धर्म के बारे में मेरी अपनी या किसी अन्य व्यक्तिगत राय से नहीं है। इसलिए, धार्मिक शिक्षा एक अच्छे शैक्षिक कार्यक्रम का एक मूलभूत हिस्सा है। विवेकानन्द ने गीता के बारे में विचार किया , उपनिषद और वेद धार्मिक शिक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण शैक्षिक मॉड्यूल हैं। उनके लिए, धर्म एक आत्म–साक्षात्कार और दिव्यीकरण है। यह केवल व्यक्ति का सुधार नहीं है, बल्कि समग्र मनुष्य के परिवर्तन के लिए भी है। वास्तविक धर्म नहीं हो सकता समय के एक विशिष्ट स्थान तक सीमित। उन्होंने विश्व धर्म की एकता के लिए तर्क दिया। उन्होंने धर्म का अभ्यास करते हुए सत्य को समझा। इस प्रकार सत्य शक्ति, साहस और ऊर्जा को बढ़ाता है। ज्ञान सत्य है, अज्ञान असत्य है। इस प्रकार सत्य शक्ति, निर्भयता और जीवन शक्ति का निर्माण करता है। यह प्रकाश देने वाला है, इसलिए, व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है और समग्र कल्याण भी करता है। विवेकानन्द के दृष्टिकोण में, नैतिकता और धर्म एक और समकक्ष हैं। भगवान हमेशा अच्छाई के पक्ष में हैं। अच्छाई के लिए लड़ना ईश्वर की सेवा है। अच्छी और धार्मिक शिक्षा युवा पुरुषों और महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा करती है।

उद्देश्य

1. विवेकानन्द के अनुसार जन शिक्षा की अवधारणा एवं विभिन्न पहलुओं का पता लगाना।
2. जन शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द की अवधारणा और वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर इसके महत्व का पता लगाना।

अनुसंधान पद्धतिः

वर्तमान अध्ययन प्रकृति में ऐतिहासिक है। इस जांच में किसी भी सांख्यिकीय डेटा को शामिल करने का कोई प्रयास नहीं किया गया है। शिक्षा, मुख्य रूप से जनता के उत्थान के लिए उनके बीच शिक्षा और वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इसकी प्रासंगिकता पर स्वामी विवेकानन्द के विचारों और विचारों का एक सामान्य सर्वेक्षण किया गया है।

शिक्षा आयोग (1964–65):

1964 में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक गंभीर चिंता के कारण एक नए शिक्षा आयोग की नियुक्ति की आवश्यकता उत्पन्न हुई। सरकार शिक्षा की बहुप्रतीक्षित राष्ट्रीय प्रणाली के विकास और सामान्य सिद्धांतों

और नीतियों के निर्माण पर एक विशेषज्ञ की सलाह चाहती थी। सभी चरणों और सभी पहलुओं में शिक्षा का विकास।

ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड (1986):

1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्राथमिक विद्यालय में आवश्यक सुविधाओं के प्रावधान को सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीय वित्तपोषित कार्यक्रम की परिकल्पना की गई है। इसमें 1987–88 में सामुदायिक विकास खंडों और नगरपालिका क्षेत्रों के 20% 1988–90 में 30% और 50% को कवर करने का प्रस्ताव है। 1900–99.

राष्ट्रीय आवश्यकताओं के प्रति प्रासंगिकता:

1. यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि शिक्षा को समाज की सामाजिक–आर्थिक आवश्यकताओं से जोड़ा जाना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य मानव रोबोट बनाना या वैश्विक बाजार में कुशल जनशक्ति की आपूर्ति करना नहीं है।

2. भारतीय शिक्षा की वर्तमान प्रणाली, जो काफी हद तक व्यक्तिगत भौतिक लाभों पर ध्यान केंद्रित करती है, ज्यादातर खुद को भौतिक पहलुओं तक ही सीमित रखती है। शिक्षक और शिक्षक के बीच संबंधों में दिए गए गैर–भौतिक व्यक्तिगत लाभ अंततः एक एकीकृत तरीके से समुदाय तक पहुंचने चाहिए। शिक्षा के सभी स्तरों पर इस पहलू पर उचित ढंग से ध्यान दिया जाना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा के साधन

जैसा कि विवेकानन्द ने कहा था, शिक्षा का साधन प्रेम है। प्रेम और चरित्र निर्माण शिक्षा के सर्वोत्तम साधन हैं। चरित्र निर्माण में प्रेम सर्वोत्तम प्रेरणा है। शिक्षक के मन में प्रेम ही शिक्षितों पर उसके प्रभाव का वास्तविक स्रोत है। सच्ची शिक्षा, व्यक्तित्व का विकास एवं विस्तार करती है। उनकी आवश्यकता थी कि समग्र मानव सुधार की शिक्षा ही प्राथमिक दृष्टि हो। "चरित्र, उत्पादकता और मानवतावाद सभी शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। विवेकानंद ने दृढ़ता से तर्क दिया कि अपने साथियों की सेवा के माध्यम से चरित्र में सुधार, अपने कम धन्य साथियों की एक बड़ी संख्या की संतुष्टि और कल्याण सुनिश्चित करने के लिए अपनी क्षमताओं का उपयोग करना –शिक्षा का उद्देश्य नागरिक होना चाहिए।" बच्चे को प्यार से शिक्षित किया जाना चाहिए, इससे लोगों के प्रति व्यक्तिगत भावनाएं और प्यार बनता है।

शिक्षा को व्यक्ति को अपनी सांस्कृतिक विरासत को पहचानने और जीवन के संघर्ष में इसका उपयोग करने में सहायता करनी चाहिए। शिक्षा एक गहरी प्रक्रिया है। वह इस बात पर जोर देते हैं कि बच्चे को ब्रह्मचर्य का अभ्यास करना चाहिए जो मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों के विकास को प्रोत्साहित करता है जिससे विचार, शब्द और कर्म में सद्गुणों को बढ़ावा मिलता है। शिक्षा के उद्देश्य में वह धार्मिक विकास पर बल देते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक बीज का निर्माण करना चाहिए और सर्वोच्च सत्य या वास्तविकता को प्राप्त करना चाहिए। शिक्षा पर विवेकानन्द के विचारों में लोकतांत्रिक दृष्टिकोण था। उन्होंने जनता के लिए गहरी चिंता व्यक्त की, "वह शिक्षा जो व्यक्तियों के मूल जनसमूह को जीवन के संघर्ष के लिए खुद को

तैयार करने में मदद नहीं करती है, जो चरित्र की गुणवत्ता, उदारता की आत्मा और शेर की बहादुरी को सामने नहीं लाती है – क्या यह नाम के लायक है।

वास्तविक शिक्षा वह है जो किसी को अपने पैरों पर खड़े होने की शक्ति देती है। जो शिक्षा अब आप स्कूलों और विश्वविद्यालयों में प्राप्त कर रहे हैं वह आपको अपच की दौड़ में शामिल कर रही है। आप केवल मशीनों की तरह काम कर रहे हैं, और एक जेलिफ़िश के रूप में जी रहे हैं उपस्थिति।"विवेकानंद के शिक्षा के सपने में ठोस राष्ट्रवादी पूर्वाग्रह था। वे शिक्षा की पश्चिमी व्यवस्था की निंदा नहीं कर रहे थे; उन्होंने भारत में पश्चिमी मॉडल की उपयुक्तता पर सवाल उठाया। भारत में शिक्षा की व्यवस्था इंडियन फाउंडेशन पर निर्भर थी जिसका समर्थन इस व्यापक तर्क के साथ किया गया था कि प्रत्येक देश को अपनी प्रकृति, इतिहास और सभ्यता पर निर्भर शिक्षा की व्यवस्था बनानी चाहिए।

शारीरिक शिक्षाः

शारीरिक शिक्षा के ज्ञान के बिना, आत्म–बोध या चरित्र निर्माण संभव नहीं है, हमें यह जानना होगा कि शारीरिक शिक्षा के माध्यम से अपने शरीर को कैसे मजबूत बनाया जाए, क्योंकि संपूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए, दिमाग और दिमाग दोनों का विकास करना महत्वपूर्ण है। शरीर। विशेष रूप से, विवेकानन्द ने शैक्षिक कार्यक्रमों में शारीरिक शिक्षा के आकलन पर ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने कहा, "गीता के अध्ययन की तुलना में फुटबॉल के माध्यम से आप स्वर्ग के अधिक निकट होंगे। आप अपने बाइसेप्स, थोड़ी मजबूत मांसपेशियों के कारण गीता को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे। आप उपनिषदों और आत्मा की महिमा को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे, जब आपका शरीर अपने पैरों पर मजबूती से खड़ा है और आप खुद को एक आदमी के रूप में महसूस करते हैं।"

जनता की शिक्षाः

व्यक्तिगत विकास निश्चित रूप से हमारे देश का पूर्ण विकास नहीं है, इसलिए उसे समाज को शिक्षा देने की आवश्यकता है। शिक्षा केवल संपन्न लोगों तथा जरूरतमंद व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं है। विवेकानन्द ने जनता की स्थिति सुधारने पर जोर दिया और उन्होंने सामूहिक शिक्षा का समर्थन किया। वह इस जन शिक्षा को व्यक्ति तथा समाज को उन्नत बनाने का साधन मानते हैं। इस प्रकार, उन्होंने अपने देशवासियों को यह जानने की सलाह दी– "मुझे लगता है कि सबसे बड़ा राष्ट्रीय पाप बहुमत की उपेक्षा है, और यह हमारी हार के कारणों में से एक है। राजनीति का कोई भी उपाय भारत की जनता के लिए उपयोगी नहीं होगा।" वे एक बार फिर निपुण हैं, अच्छी तरह से खिलाए गए हैं और अच्छी तरह से देखभाल की गई है।

समाज के कमजोर वर्ग के लिए शिक्षाः

विवेकानंद ने सार्वभौमिक शिक्षा के लिए तर्क दिया ताकि प्रतिगामी व्यक्ति दूसरों के साथ मिल सकें। पिछड़े वर्गों को ऊपर उठाने के लिए उन्होंने शिक्षा को उनकी जीवन प्रक्रिया के लिए एक शक्तिशाली साधन के रूप में चुना। परिणामस्वरूप, शिक्षा को राष्ट्र की प्रत्येक परिवार इकाई, कारखानों, खेल के मैदानों और बागवानी क्षेत्रों तक फैलाना चाहिए। अगर बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं तो शिक्षक उनसे संपर्क करें. कुछ

पढ़े–लिखे लोगों को सहयोग करके शिक्षा का सारा सामान जुटाना चाहिए और गाँव में जाकर बच्चों को शिक्षा देनी चाहिए। इस प्रकार, विवेकानन्द ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों, अमीर और गरीब, युवा और बूढ़े, पुरुष और महिला, सभी के लिए शिक्षा का समर्थन किया।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानन्द ने इस बात पर जोर दिया कि हमारी शिक्षा जनता, निराश्रितों, किसानों और मजदूर वर्गों के लिए है। वह पहले भारतीय राष्ट्रवादी थे जिन्होंने भारत के युवाओं को प्रेरित किया। उन्होंने स्पष्ट आह्वान किया "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए" उन्होंने सार्वभौमिकता और आध्यात्मिक भाईचारे पर जोर दिया है। वह शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी थे और उन्होंने इसके हर पहलू को छुआ। उन्होंने भारतीय आध्यात्मिकता और पश्चिमी भौतिकवाद को एकजुट करने का प्रयास किया। तो स्वामी विवेकानन्द का जीवन संक्षिप्त था, लेकिन उनकी दूरदर्शिता दूरदर्शितापूर्ण थी और वास्तविकता में साकार होती है। अंत में, स्वामी विवेकानन्द के विचारों ने हम पर गहरी छाप छोड़ी है। इस प्रकार वे प्रगति का मार्ग दिखाते हैं। विवेकानन्द के शिक्षा के लक्ष्य, जन–जन को प्रेरित करना शिक्षा से ही संभव है। उनका मानना है कि शिक्षा इसके मददगार, जमीन से जुड़े और व्यापक चरित्र पर प्रकाश डालती है। शिक्षा देकर, वह पद, विचारधारा, राष्ट्रीयता या समय की परवाह किए बिना मानव जाति के नैतिक और आध्यात्मिक कल्याण और उत्थान को मूर्त रूप देने का प्रयास करता है। उनके शिक्षा के उद्देश्यों की पद्धति से हम जाति–पाँति के बिना सद्भावना और शांति वाला एक मजबूत देश प्राप्त कर सकते हैं। वह हमारे लिए एक मजबूत देश का निर्माण करता है।

संदर्भ

1. घोष, पी. (एनडी). स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन के मुख्य सिद्धांतों पर निबंध। दिसंबर 2018 से लिया गया http://www.shareyouressays.com.
2. मीता, ए.के. (अप्रैल 2015)। स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट, पीपी 33.35
3. निथिया, पी. (नवंबर 2012)। शिक्षा दर्शन पर स्वामी विवेकानन्द के विचार। एशियन जर्नल ऑफ़ मल्टीडायमेंशनल अनुसंधान, 42.48
4. सुप्रियाप्रतापन. (जे2014-15 जून)। स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन। दिसंबर 2018 से लिया गया https://supriyaprathapanedu.
5. वालिया, जे. शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार 46–47
6. विवेकानन्द, स्वामी, शिक्षा सन्दर्भ, उद्घाटन कार्यालय, कलकत्ता, 1991।
7. विश्वास दयानंद, स्वामी, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मठ, ढाका, 2013।

8. लोकेश्वरानंद, स्वामी, संपादक, चिंतानायक विवेकानन्द, रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकाता, 1995।

9. स्वामी विवेकानन्द के शब्द और लेखन (संकलन), रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन, ढाका, 2003।

10. नायर वी.एस. सुकुमारन. (1987)। स्वामी विवेकानंद; शिक्षक. नई दिल्लीः स्टर्लिंग पब्लिशर (पी) लिमिटेड।

11. शर्मा, आर.एन. (2008)। शैक्षिक दर्शन की पाठ्यपुस्तक। नई दिल्ली; कनिष्क प्रकाशन.

12. अग्रवाल, जे.सी. और गुप्ता, एस. (2006)। शिक्षा पर महान दार्शनिक और विचारक। नई दिल्लीः शिप्रा प्रकाशन।

13. डैश बी.एन. (1986). शैक्षिक दर्शन और शिक्षण अभ्यास. नई दिल्लीः कल्याणी पब्लिशर्स.

14. गोयल, एस.एल. (2008)। प्रशासनिक एवं प्रबंधन विचारक; नई सहस्राब्दी में प्रासंगिकता. नई दिल्लीः डीप एंड डीप पब्लिकेशन (पी) लिमिटेड।

15. एक संकलन. (2015)। निर्णायक मोड़ के रूप में विवेकानन्द; एक नई आध्यात्मिक लहर का उदय. कोलकाताः अद्वैत आश्रम प्रकाशन।